|| श्री राम चालीसा ||

श्री रघुवीर भक्त हितकारी*

सुन लीजै प्रभु अरज हमारी**

निशिदिन ध्यान धरै जो कोई*

ता सम भक्त और नहिं होई**

ध्यान धरे शिवजी मन माहीं*

ब्रह्म इन्द्र पार नहिं पाहीं**

दूत तुम्हार वीर हनुमाना*

जासु प्रभाव तिहूं पुर जाना**

|| जय श्री राम ||

तब भुज दण्ड प्रचण्ड कृपाला*

रावण मारि सुरन प्रतिपाला**

तुम अनाथ के नाथ गुंसाई*

दीनन के हो सदा सहाई**

ब्रह्मादिक तव पारन पावैं*

सदा ईश तुम्हरो यश गावैं**

चारिउ वेद भरत हैं साखी*

तुम भक्तन की लज्जा राखीं**

गुण गावत शारद मन माहीं*

सुरपति ताको पार न पाहीं**

नाम तुम्हार लेत जो कोई*

ता सम धन्य और नहिं होई**

राम नाम है अपरम्पारा*

चारिहु वेदन जाहि पुकारा**

गणपति नाम तुम्हारो लीन्हो*

तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हो**

शेष रटत नित नाम तुम्हारा*

महि को भार शीश पर धारा**

फूल समान रहत सो भारा*

पाव न कोऊ तुम्हरो पारा**

भरत नाम तुम्हरो उर धारो*

तासों कबहुं न रण में हारो**

|| सीता राम ||

नाम शक्षुहन हृदय प्रकाशा*

सुमिरत होत शत्रु कर नाशा**

लखन तुम्हारे आज्ञाकारी*

सदा करत सन्तन रखवारी**

ताते रण जीते नहिं कोई*

युद्ध जुरे यमहूं किन होई**

महालक्ष्मी धर अवतारा*

सब विधि करत पाप को छारा**

सीता राम पुनीता गायो*

भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो**

घट सों प्रकट भई सो आई*

जाको देखत चन्द्र लजाई**

सो तुमरे नित पांव पलोटत*

नवो निद्धि चरणन में लोटत**

सिद्धि अठारह मंगलकारी*

सो तुम पर जावै बलिहारी**

औरहु जो अनेक प्रभुताई*

सो सीतापति तुमहिं बनाई**

इच्छा ते कोटिन संसारा*

रचत न लागत पल की बारा**

जो तुम्हे चरणन चित लावै*

ताकी मुक्ति अवसि हो जावै**

जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा*

नर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा**

सत्य सत्य जय सत्यव्रत स्वामी*

सत्य सनातन अन्तर्यामी**

|| जय श्री राम ||

सत्य भजन तुम्हरो जो गावै*

सो निश्चय चारों फल पावै**

सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं*

तुमने भक्तिहिं सब विधि दीन्हीं**

सुनहु राम तुम तात हमारे*

तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे**

तुमहिं देव कुल देव हमारे*

तुम गुरु देव प्राण के प्यारे**

जो कुछ हो सो तुम ही राजा*

जय जय जय प्रभु राखो लाजा**

राम आत्मा पोषण हारे*

जय जय दशरथ राज दुलारे**

ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरूपा*

नमो नमो जय जगपति भूपा**

धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा*

नाम तुम्हार हरत संतापा**

|| जय श्री राम ||

सत्य शुद्ध देवन मुख गाया*

बजी दुन्दुभी शंख बजाया**

सत्य सत्य तुम सत्य सनातन*

तुम ही हो हमरे तन मन धन**

याको पाठ करे जो कोई*

ज्ञान प्रकट ताके उर होई**

आवागमन मिटै तिहि केरा*

सत्य वचन माने शिर मेरा**

और आस मन में जो होई*

मनवांछित फल पावे सोई**

तीनहुं काल ध्यान जो ल्यावै*

तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै**

साग पत्र सो भोग लगावै*

सो नर सकल सिद्धता पावै**

अन्त समय रघुबरपुर जाई*

जहां जन्म हरि भक्त कहाई**

श्री हरिदास कहै अरु गावै*

सो बैकुण्ठ धाम को पावै**

|| दोहा ||

सात दिवस जो नेम कर,

पाठ करे चित लाय*

हरिदास हरि कृपा से,

अवसि भक्ति को पाय**

राम चालीसा जो पढ़े,

राम चरण चित लाय*

जो इच्छा मन में करै,

सकल सिद्ध हो जाय**

|| इति श्री राम चालीसा समाप्त ||